हफ़्तावार रिसाला : 389
Weekly Booklet : 389

Aashiqane Duroodo Salam Ke 22 Waqiaat (HINDI)

आ़शिक़ाने दुरूदो सलाम के 22 वाक़िआ़त

सफ़हात 31

क़र्ज़ा उतर गया 01

बीमारी से शिफ़ा मिल गई 11

दरिन्दे से नजात मिल गई 20

बुरी शक्ल से नजात 26

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **''आशिक़ाने दुरूदो सलाम के 22 वाक़िआत''**

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

आ़शिक़ाने दुरूदो सलाम के 22 वाक़िआ़त

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 29 सफ़्हात का रिसाला : **"आ़शिक़ाने दुरूदो सलाम के 22 वाक़िआ़त"** पढ़ या सुन ले उसे अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ दे, दुन्या व आख़िरत में परेशानियों से बचा और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

700 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जो कोई शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में रोज़ाना सात सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, **अल्लाह** पाक कुछ फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा जो इस दुरूदे पाक को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचाएंगे, इस से **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक ख़ुश होगी फिर **अल्लाह** पाक उन फ़िरिश्तों को हुक्म देगा कि इस दुरूद पढ़ने वाले के लिये क़ियामत तक दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहो। (القول البدیع، ص395)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾1﴿ क़र्ज़ा उतर गया

एक नेक आदमी पर तीन हज़ार दीनार (या'नी 3000 सोने के सिक्के) क़र्ज़ थे, क़र्ज़ ख़्वाह ने जब क़र्ज़ की वापसी का मुत़ालबा किया तो उस नेक शख़्स ने कहा कि फ़िलह़ाल तो मैं मजबूर हूं, मेरे पास पैसे नहीं हैं।

क़र्ज़ ख़्वाह ने उस नेक शख़्स के ख़िलाफ़ क़ाज़ी के हां दा'वा दाइर कर दिया, क़ाज़ी साहिब ने उस मक़्रूज़ को बुलवाया और उस की बात सुनने के बा'द उसे एक महीने की मोहलत दी और ताकीद की, कि इस मुद्दत में ज़रूर क़र्ज़ की वापसी का इन्तिज़ाम कर लो। वोह नेक शख़्स बहुत परेशान था और सोचने लगा कि क्या करूं ? बहर हाल ! वोह किसी जगह बैठ कर **अल्लाह** पाक की बारगाह में आजिज़ी व इन्किसार के साथ मुतवज्जेह हुवा और साथ ही हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, जब कुछ दिन गुज़र गए तो उसे रात को एक ख़्वाब दिखाई दिया, कोई कहने वाला कहता है : परेशान मत हो ! तुम्हारा क़र्ज़ अदा हो जाएगा। तू अ़ली बिन ईसा वज़ीरे सल्त़नत के पास जा और जा कर उसे कह दे कि क़र्ज़ा अदा करने के लिये मुझे तीन हज़ार दीनार दे दे। वोह नेक आदमी जब बेदार हुवा तो बड़ा ख़ुश था लेकिन फिर येह ख़याल भी आया कि मेरे पास तो अपने ख़्वाब को सच्चा साबित करने की कोई निशानी नहीं है, अगर वज़ीर साहिब ने दलील या कोई निशानी त़लब की तो फिर मेरा क्या होगा ? उस नेक आदमी का कहना है कि येही सोचते हुए दूसरी रात आ गई, जब मैं सोया तो मेरी सोई हुई क़िस्मत जाग उठी, मुझे आक़ाए दो जहां, रह़मते दो आ़लमिय्यां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अ़ली बिन ईसा वज़ीर के पास जाने का इर्शाद फ़रमाया। जब आंख खुली तो ख़ुशी की इन्तिहा न थी, तीसरी रात फिर उम्मत के वाली صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाते हैं और फिर हुक्म फ़रमाते हैं कि वज़ीर अ़ली बिन ईसा के पास जाओ ! मैं ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई निशानी या दलील इर्शाद फ़रमा दीजिये

जो मैं उस वज़ीर को बताऊं। येह सुन कर मंगतों की झोलियां भरने वाले दाता, सख़ावत के दरिया बहाने वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर वज़ीर तुझ से कोई निशानी पूछे तो कह देना कि तुम नमाज़े फ़ज्र के बा'द किसी के साथ बात करने से पहले **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात पर पांच हज़ार (5000) बार दुरूदे पाक पढ़ते हो, जिसे **अल्लाह** पाक और किरामन कातिबीन के सिवा कोई नहीं जानता। येह फ़रमा कर सय्यिदे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए, मैं बेदार हुवा, नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद से बाहर क़दम रखा, ग़ौर किया तो मा'लूम हुवा कि आज मोहलत को मुकम्मल एक महीना गुज़र चुका था। मैं वज़ीर साहिब की रिहाइश गाह पर पहुंचा और वज़ीर साहिब से सारा क़िस्सा कह सुनाया, जब वज़ीर साहिब ने कोई निशानी मांगी और मैं ने आक़ा करीम, रसूले अ़ज़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुनाया तो वज़ीर साहिब ख़ुशी व मसर्रत से झूम उठे, वोह घर के अन्दर गए और नव हज़ार (9000) दीनार ले कर आ गए, उन में से तीन हज़ार (3000) मुझे दिये और कहा : येह तुम्हारे क़र्ज़ की अदाएगी के लिये हैं, फिर तीन हज़ार और दिये और कहा : येह तुम्हारे बाल बच्चों के अख़्राजात के लिये हैं, फिर तीन हज़ार और दिये और कहा : येह तुम्हारे कारोबार के लिये हैं। जब मुझे रुख़्सत करने लगे तो क़सम दे कर कहा : ऐ भाई ! तू मेरा दीनी भाई है, येह महब्बत वाला तअ़ल्लुक़ न तोड़ना और जब भी कोई काम हो, किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मेरे पास आ जाना, मैं तुम्हारा मस्अला ह़ल कर दिया करूंगा। उस शख़्स का बयान है कि मैं वोह रक़म ले कर सीधा क़ाज़ी साहिब की अ़दालत में पहुंच गया और जब फ़रीक़ैन का बुलावा हुवा तो मैं आगे बढ़ा और मैं ने

तीन हज़ार (3000) दीनार क़ाज़ी साहिब के सामने रख दिये। अब क़ाज़ी साहिब ने सुवाल कर दिया कि तू तो मुफ़्लिस और कंगाल था फिर तू येह इतनी सारी रक़म कहां से ले कर आया है ? मैं ने सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया, क़ाज़ी साहिब ने येह सुना तो ख़ामोश हो गए, फिर उठ कर अपने घर गए और घर से तीन हज़ार दीनार ले कर आ गए और कहने लगे : मैं भी उसी आक़ाए मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दर का ग़ुलाम हूं, तुम्हारा येह तमाम क़र्ज़ा मैं अपने पास से अदा करता हूं। जब क़र्ज़ ख़्वाह ने येह मुआ़मला देखा तो वोह कहने लगा : मैं **अल्लाह** पाक और उस के रसूले अ़ज़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये इस बन्दे का क़र्ज़ मुआ़फ़ करता हूं। येह देख कर उस मक़्रूज़ ताजिर ने क़ाज़ी साहिब से कहा : जनाब आप का बहुत शुक्रिय्या। आप अपनी रक़म संभाल लीजिये, अब मुझे इस की ज़रूरत नहीं रही। तो क़ाज़ी साहिब कहने लगे : मैं **अल्लाह** और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत में जो दीनार लाया हूं वोह वापस नहीं लूंगा, येह दीनार आप के हैं और आप इन्हें ले जाएं। वोह साहिब कहते हैं : मैं जो पहले क़र्ज़े में जकड़ा हुवा था, अब बारह हज़ार (12000) दीनार ले कर घर आ गया, मेरा क़र्ज़ा भी मुआ़फ़ हो गया, घर के लिये अख़्राजात भी मिल गए और कारोबार करने के लिये भी अच्छी ख़ासी रक़म मिल गई। येह सारी बरकतें दुरूदे पाक पढ़ने की वज्ह से ज़ाहिर हुईं। (جذب القلوب، ص237 ملخصًا)

मुश्किल जो सर पे आ पड़ी तेरे ही नाम से टली मुश्किल कुशा है तेरा नाम तुझ पर दुरूद और सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकतें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! दुरूद पढ़ने वाले शख़्स की मुश्किलें ह़ल क्यूं न होंगी कि दुरूद पढ़ने वाले पर **अल्लाह** पाक की रह़मतें उतरती हैं।

चुनान्चे **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم، ص172، حدیث:912)

क़ाज़ी अबू अ़ब्दुल्लाह सकाकी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक जिस बन्दे पर एक रह़मत नाज़िल फ़रमाए तो वोह रह़मत उस के लिये दुन्या और जो कुछ इस दुन्या में है उस से बेहतर होती है तो दस रह़मतों के मुतअ़ल्लिक़ क्या ख़याल है ? **अल्लाह** पाक दुरूद पढ़ने वाले से उन दस रह़मतों के सबब कितनी बलाएं और मुसीबतें दूर फ़रमाएगा और उन रह़मतों के सबब दुरूद पढ़ने वाले को कितनी बरकतें ह़ासिल होंगी। शैख़ अबू अ़त़ाउल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक जिस पर एक रह़मत नाज़िल फ़रमाए वोह उस के दुन्या व आख़िरत के सब मुआ़मलात में किफ़ायत करेगी तो उस शख़्स का क्या मक़ाम होगा जिस पर दस रह़मतें नाज़िल हों। ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह रस्साअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रह़मत इन्आ़म को कहते हैं, दुरूद पढ़ने वाले शख़्स को **अल्लाह** पाक दुन्या के साथ साथ आख़िरत में भी इन्आ़मात से नवाज़ेगा। (مطالع المسرات، ص30 ملتقطاً)

येह तो करम है उन का वरना हम में तो ऐसी बात नहीं

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बड़े बड़े उ़लमाए किराम और अइम्मए दीन (या'नी बड़े बड़े इमाम) फ़रमाते हैं : एक दुरूदे पाक दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ दुन्या में है उस) से बेहतर और दोनों जहान के लिये काफ़ी है। इस का सवाब हज़ार साल की इ़बादत के सवाब से ज़ियादा और इस का रुत्बा अक्सर जिस्मानी, माली और ज़बान के ज़रीए़ की जाने वाली इ़बादात

से आ'ला है (या'नी येह नफ़्ल इबादतें और फ़राइज़, वाजिबात, सुनने मुअक्कदा वग़ैरा अपनी जगह पर होते हैं) और येह फ़ज़्लो इनायत इस उम्मते बा बरकत पर उस साहिबे दौलत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बदौलत है वरना हम कब इस इज़्ज़तो करम के लाइक़ थे। (सुरूरुल क़ुलूब, स. 340 तस्हीलन)

बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में किसी शाइर ने बड़ी प्यारी ना'त कही, उस के चन्द अश्आ़र येह हैं :

कोई सलीक़ा है आरज़ू का न बन्दगी मेरी बन्दगी है
येह सब तुम्हारा करम है आक़ा कि बात अब तक बनी हुई है

हम अपने आ'माल जानते हैं हम अपनी निस्बत से कुछ नहीं हैं
तुम्हारे दर की अ़ज़ीम निस्बत मताए अ़ज़मत बनी हुई है

येही है ख़ालिद असासे रह़मत येही है ख़ालिद बिनाए अ़ज़मत
नबी का इरफ़ान बन्दगी है नबी का इरफ़ान ज़िन्दगी है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तमाम आ'माल से अफ़्ज़ल

ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस में कोई शुबा नहीं कि शबे असरा के दूल्हा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना तमाम आ'माल से अफ़्ज़ल है, येह उन मलाएका का ज़िक्र है जो अत़राफ़े जन्नत में रहते हैं और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की बरकत येह है कि जब वोह (मलाएका) नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो जन्नत कुशादा हो जाती है। (الابریز، 2/338)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दुरूदे पाक के मक़ासिद व फ़वाइद

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह हुसैन बिन ह़सन ह़लीमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ (वफ़ात : 403 हि.) फ़रमाते हैं : "दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का एक मक़्सद तो येह है कि **अल्लाह** पाक का हुक्म बजा लाते हुए उस का क़ुर्ब ह़ासिल किया जाए और दूसरा येह कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हम पर जो ह़क़ है उसे अदा किया जाए।"

ह़ज़रते इमाम इ़ज़्ज़ुद्दीन अ़ब्दुस्सलाम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ (वफ़ात : 660 हि.) ने भी इन की इत्तिबाअ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "हमारा हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजना उन के लिये क़त़्अ़न किसी क़िस्म की सिफ़ारिश का बाइ़स नहीं बनता क्यूं कि हम जैसे इन्सान इन जैसी हस्ती की शफ़ाअ़त कैसे कर सकते हैं ? अलबत्ता ! **अल्लाह** पाक ने हमें हुक्म दिया है कि हम अपने मोह़सिने आ'ज़म صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह़सानात का बदला दें और अगर ऐसा न कर सकें तो इन के ह़क़ में दुआ़ करें। पस **अल्लाह** पाक ने हमारी ह़ालत के पेशे नज़र कि हम अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह़सानात का बदला देने से आ़जिज़ हैं तो हमें इन पर दुरूदे पाक भेजने की ता'लीम फ़रमाई।" (حدیقہ ندیہ، 1/8)

ह़ज़रते इब्ने अ़रबी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का फ़ाएदा ख़ुद पढ़ने वाले को होता है क्यूं कि येह बात अच्छे अ़क़ीदे, ख़ालिस निय्यत, इ़ज़्हारे मह़ब्बत, हमेशा फ़रमां बरदार रहने और सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वासित़ए मुबारका को मोह़तरम जानने पर रहनुमाई करती है।" (المواہب اللدنیہ، 2/506)

दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क्या नहीं मिलता !

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ❀ दुरूद शरीफ़ से मुसीबतें टलती हैं ❀ बीमारियों से शिफ़ा ह़ासिल होती है ❀ ख़ौफ़ दूर होता है ❀ ज़ुल्म से नजात ह़ासिल होती है ❀ दुश्मनों पर फ़त्ह़ ह़ासिल होती है ❀ **अल्लाह** की रिज़ा ह़ासिल होती है और दिल में उस की मह़ब्बत पैदा होती है ❀ फ़िरिश्ते उस का ज़िक्र करते हैं ❀ आ'माल की तक्मील होती है ❀ दिलो जान, अस्बाबो माल की पाकीज़गी ह़ासिल होती है ❀ पढ़ने वाला ख़ुशह़ाल हो जाता है ❀ बरकतें ह़ासिल होती हैं ❀ औलाद दर औलाद चार नस्लों तक बरकत रहती है ❀ दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क़ियामत की होलनाकियों से नजात ह़ासिल होती है ❀ सकराते मौत में आसानी होती है ❀ दुन्या की तबाह कारियों से नजात मिलती है ❀ तंगदस्ती दूर होती है ❀ भूली हुई चीज़ें याद आ जाती हैं ❀ मलाएका दुरूदे पाक पढ़ने वाले को घेर लेते हैं ❀ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला जब पुल सिरात़ से गुज़रेगा तो नूर फैल जाएगा और वोह साबित क़दम हो कर पलक झपक्ने में नजात पा जाएगा ❀ अ़ज़ीम तर सआ़दत येह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का नाम हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया जाता है ❀ ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत बढ़ती है ❀ महासिने नबविय्या صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दिल में घर कर जाते हैं ❀ कस्रते दुरूद शरीफ़ से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर ज़ेह्न में क़ाइम हो जाता है ❀ ख़ुश नसीबों को दरजए क़ुर्बते मुस्त़फ़वी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ासिल हो जाता है ❀ ख़्वाब में सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदारे फ़ैज़ आसार नसीब होता है ❀ रोज़े क़ियामत मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुसाफ़ह़े की सआ़दत नसीब होगी ❀ फ़िरिश्ते मरह़बा कहते हैं और

महब्बत रखते हैं ❀ फ़िरिश्ते उस के दुरूद को सोने के क़लमों से चांदी की तख़्तियों पर लिखते और उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं ❀ फ़िरिश्तगाने सय्याह़ीन (ज़मीन पर सैर करने वाले फ़िरिश्ते) उस के दुरूद शरीफ़ को मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पढ़ने वाले और उस के बाप के नाम के साथ पेश करते हैं। (جذب القلوب، ص229)

ताजदारे ह़रम ऐ शहन्शाहे दीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
हो करम मुझ पे या सय्यिदल मुरसलीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
अब बुला लो मदीने में अ़त्तार को अपने क़दमों में रख लो गुनहगार को
कोई इस के सिवा आरज़ू ही नहीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

(वसाइले बख़्शिश, स. 603, 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾2﴿ हर मुसीबत में काम आने वाला फ़िरिश्ता

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने फ़ौत शुदा पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? वोह बोला : मुझे बड़ी सख़्तियों से वासिता़ पड़ा, मुन्कर नकीर (क़ब्र में इम्तिह़ान लेने वाले फ़िरिश्तों) के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वज्ह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है। अब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े, इतने में एक साह़िब जो बड़े ख़ूब सूरत और ख़ुश्बूदार थे, वोह मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान आ गए और उन्हों ने मुझे

मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ? फ़रमाया : तुम्हारे बहुत ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तुम्हारी मदद करने की ज़िम्मेदारी दी गई है।

(القول البدیع، ص260)

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते !

سُبْحٰنَ اللّٰه ! कस्रते दुरूद शरीफ़ की बरकत से मदद करने के लिये क़ब्र में जब फ़िरिश्ता आ सकता है तो तमाम फ़िरिश्तों के भी आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुल बजा तो फ़रियाद की है :

मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आक़ा

रोशन मेरी तुरबत को लिल्लाह शहा करना जब नज़्अ़ का वक़्त आए दीदार अ़त़ा करना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पुल सिरात़ पर नूर

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मेरे ऊपर दुरूद पुल सिरात़ के लिये नूर है, जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन अस्सी मरतबा दुरूद भेजता है, **अल्लाह** पाक उस के अस्सी साल के गुनाहों को मुआ़फ़ कर देता है।

(جامع الصغیر، ص320، حدیث:5191)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जिस्म व रूह़ की सलामती

एक दाना का क़ौल है : जिस्म की सलामती कम खाने में है और रूह़ की सलामती गुनाहों की कमी में है और दीन की सलामती ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ने में है। (مکاشفۃ القلوب، ص9)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हुज़ूर उम्मत के दुरूदे पाक से ख़ुश होते हैं

बहुत बड़े आशिक़े रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से दुरूदे पाक के बारे में एक सुवाल किया गया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मत के दुरूदे पाक पढ़ने से ख़ुश होते हैं।" (افضل الصلوات علی سید السادات، ص15-16 ملتقطاً وملخصاً)

हों दुरूदो सलाम, मेरे लब पर मुदाम हर घड़ी दम बदम, ताजदारे ह़रम

(वसाइले बख़्शिश, स. 249)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ बीमारी से शिफ़ा मिल गई

एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बीमार हो गए, बहुत इ़लाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी, इसी ह़ालत में छे महीने गुज़र गए। एक दिन उन्हें पता चला कि ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه उन के महल के पास से गुज़र रहे हैं तो आप ने उन्हें अपने पास तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की। जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه तशरीफ़ लाए तो उसे देख कर इर्शाद फ़रमाया : फ़िक्र न करो, **अल्लाह** पाक की रह़मत से आज ही आराम

आ जाएगा। फिर आप ने दुरूदे पाक पढ़ कर बादशाह के जिस्म पर हाथ फेरा तो वोह उसी वक़्त तन्दुरुस्त हो गए। (راحت القلوب (فارسی)، ص50)

हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد ता 'वीज़ हर बला है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मेरे ह़बीब पर कसरत से दुरूद भेजो

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़ी नाज़िल फ़रमाई : ऐ मूसा ! क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम से इस से ज़ियादा क़रीब हो जाऊं जितना तुम्हारा कलाम तुम्हारी ज़बान से, तुम्हारे दिल के ख़यालात तुम्हारे दिल से, तुम्हारी रूह़ तुम्हारे बदन से और तुम्हारी बसारत का नूर तुम्हारी आंखों से क़रीब है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां ऐ मेरे रब ! **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : तो फिर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करो। (حلیۃ الاولیاء، 6/33، رقم:7716)

नूह़ो ख़लीलो मूसा व ईसा सब का है आक़ा नामे मुह़म्मद
पाईं मुरादें दोनों जहां में जिस ने पुकारा नामे मुह़म्मद
दोनों जहां में दुन्या व दीं में है इक वसीला नामे मुह़म्मद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ राहे मदीना में फ़राइज़ के बा'द कोई इबादत दुरूदे पाक के बराबर नहीं

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब मैं मक्के से मदीने शरीफ़ को चला, शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ (या'नी मेरे पीरो मुर्शिद) ने फ़रमाया : इस राह में फ़राइज़ के बा'द कोई इबादत दुरूदे पाक के बराबर नहीं, अपने सब अवक़ात इसी में सर्फ़

कीजियो ! (या'नी मक्के मदीने के रास्ते में अपना सारा वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहना) । मैं ने अ़र्ज़ किया : कोई ख़ास ता'दाद है ? फ़रमाया : यहां कोई ख़ास ता'दाद नहीं, इतना पढ़ो इतना पढ़ो इतना पढ़ो कि दुरूदे पाक के रंग में रंग जाओ और उस में मुस्तग़रक़ हो जाओ (या'नी दुरूदो सलाम में डूब जाओ) । (सुरूरुल क़ुलूब, स. 341)

यूं मुझ को मौत आए तुम्हारे दियार में चौखट पे सर हो लब पे दुरूदो सलाम हो
बेकार गुफ़्तगू से मेरी जान छूट जाए हर वक़्त काश ! लब पे दुरूदो सलाम हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ने की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले । (الترغیب والترہیب، 2/328، حدیث:22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾5﴿ सलाम भेजने वालों को जवाबे सलाम

ह़ज़रते सुलैमान बिन सुहैम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का बयान है : मैं ने ख़्वाब में बीबी आमिना के लाल, रसूले बे मिसाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार किया तो मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह जो लोग आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर आप पर सलाम भेजते हैं, क्या आप उन के सलाम से वाक़िफ़ होते हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां और मैं उन को सलाम का जवाब (भी) देता हूं । (حیاۃ الانبیاء للبیہقی، ص105، رقم:19)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ लिखते हैं : ख़याल रहे कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) एक वक़्त में बे शुमार दुरूद पढ़ने वालों की त़रफ़ यक्सां (या'नी बराबर) तवज्जोह रखते हैं, सब के सलाम का जवाब देते हैं जैसे सूरज बयक वक़्त सारे आ़लम पर तवज्जोह कर लेता है, ऐसे (ही) आस्माने नुबुव्वत के सूरज एक वक़्त में सब का दुरूदो सलाम सुन भी लेते हैं और उस का जवाब भी देते हैं लेकिन इस में आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को कोई तक्लीफ़ भी मह़सूस नहीं होती क्यूं न हो कि मज़्हरे ज़ाते किब्रिया हैं, (जैसे) रब तआ़ला बयक वक़्त सब की दुआ़एं सुनता है (वैसे ही उस के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की अ़त़ा से एक ही वक़्त में बे शुमार आ़शिक़ों का दुरूदो सलाम सुनते हैं) ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/101 ब तग़य्युरे क़लील)

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बिरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ अ़र्ज़ करते हैं :

ऐ मदीने के ताजदार सलाम ऐ ग़रीबों के ग़म गुसार सलाम
उस जवाबे सलाम के सदक़े ता क़ियामत हों बे शुमार सलाम

(ज़ौक़े ना'त, स. 170, 171)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ बारगाहे रिसालत से सलाम

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन यह़या किरमानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते अबू अ़ली बिन शाज़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के पास बैठे थे कि अचानक एक अजनबी नौ जवान आया और सलाम कर के ह़ज़रते अबू अ़ली बिन शाज़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के बारे में पूछा : हम ने उन की त़रफ़ इशारा किया कि येह हैं। उस नौ जवान ने ह़ज़रते अबू अ़ली शाज़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमत

में अ़र्ज़ किया : ऐ शैख़ ! मैं ने **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत की, उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : तुम अबू अ़ली बिन शाज़ान को ढूंडो, जब उस से मुलाक़ात हो तो उसे मेरा सलाम देना। वोह नौ जवान जब चला गया तो ह़ज़रते अबू अ़ली शाज़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत रोए और रो कर फ़रमाया : मैं अपने अन्दर कोई ऐसा कमाल तो नहीं पाता जिस के सबब मुझे ऐसी सआ़दत ह़ासिल हो, सिवाए इस बात के कि मैं ह़दीसे पाक पढ़ता रहता हूं और अह़ादीसे मुबारका में जब भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक आता है, हर बार दुरूदे पाक पढ़ता हूं। रावी कहते हैं : इस वाक़िए़ के दो या तीन महीने के बा'द ह़ज़रते अबू अ़ली बिन शाज़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया। (القربۃ الی رب العالمین لابن بشکوال، ص63، رقم:60)

वोह सलामत रहा क़ियामत में पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर मेरी जानिब से लाख बार सलाम
मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर भेज ऐ मेरे किरदिगार सलाम

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस शे'र में "लाख बार सलाम" के अल्फ़ाज़ हैं, अगर कोई येह शे'र पढ़ता है तो उस की त़रफ़ से सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाख मरतबा सलाम पेश हो जाएंगे اِنْ شَآءَ الله। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : इसी त़रह़ हम "मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम" कहते हैं तो यूं हम भी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाखों सलामों का तोह़फ़ा पेश कर लेते हैं। मुख़्तलिफ़ मह़ाफ़िल व इज्तिमाआ़त में जब "सलामे रज़ा" पढ़ने का वक़्त आता है तो कुछ लोगों के होंट बन्द होते हैं, वोह इस सलाम को पढ़ने में सुस्ती करते हैं, यूंही बा'ज़ अवक़ात ना'त ख़्वान सलाम पढ़ते पढ़ते बार बार येह मिस्रअ़ "मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम" पढ़ने के बजाए और शे'र (या'नी दूसरा शे'र)

शुरूअ़ कर देते हैं, मेरे ज़ेह्न में उस वक़्त येह बात आती है कि वोह फ़ज़ीलत से महरूम रहे कि "मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम" पढ़े बिग़ैर दूसरा मिस्रअ़ शुरूअ़ कर दिया। येह समझने की बात है, जब सलातो सलाम पढ़ने के लिये ही खड़े हैं, टाइम भी दे रहे हैं तो अब थोड़ा होंटों को भी ह़रकत दें, ज़बान को भी मौक़अ़ दें कि येह भी सलाम पढ़ ले। हमारे एक बार "मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम" कहने पर हमारी त़रफ़ से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाखों सलाम अ़र्ज़ हो गए और इन लाखों में से एक सलाम का जवाब भी अगर हमें मिल गया तो ख़ुदा की क़सम! दुन्या व आख़िरत में हमारा बेड़ा पार हो जाएगा। اِنْ شَآءَ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾7﴿ दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत का एक तवज्जोह त़लब वाक़िआ़

अपने वक़्त के मुह़द्दिस ह़ज़रते अबू सुलैमान मुह़म्मद बिन हुसैन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नूर वाले आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में मुझ से फ़रमाया : ऐ अबू सुलैमान! जब तुम ह़दीस पढ़ते हुए मुझे याद करते हो तो मुझ पर दुरूद पढ़ते हो, तो "وَسَلَّم" क्यूं नहीं कहते? इस में चार ह़र्फ़ हैं, हर ह़र्फ़ के बदले दस नेकियां हैं, लिहाज़ा तुम चालीस नेकियां छोड़ देते हो। (القول البدیع، ص464) मत़लब येह हुवा कि "صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم" पढ़ने से सवाब ज़ियादा मिलेगा, "وَسَلَّم" तर्क कर देंगे तो सवाब कम हो जाएगा या'नी दुरूद के साथ साथ सलाम भी पढ़ लें तो सवाब ज़ियादा मिलेगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾8﴿ आशिक़े दुरूद का मक़ाम

ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दिन बग़्दाद शरीफ़ के बहुत बड़े आ़लिम ह़ज़रते अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने फ़ौरन खड़े हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया, ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़्दाद कल तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़्रोज़ मन्ज़र देखा कि अबू बक्र शिब्ली बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर इन को सीने से लगा लिया और पेशानी को चूम कर अपने पहलू में बिठा लिया। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! शिब्ली पर इस क़दर शफ़्क़त की वज्ह ? **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है : ﴿ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴾ (پ11، التوبہ:128) और इस के बा'द मुझ पर दुरूद पढ़ता है।

(جلاء الافہام، ص241-القول البدیع، ص346)

बे अ़दद और बे अ़दद तस्लीम बे शुमार और बे शुमार दुरूद
बैठते उठते जागते सोते हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ कसरत से दुरूदे पाक न पढ़ता तो हलाक हो जाता

ह़ज़रते शैख़ हुसैन बिन अह़मद कव्वाज़ बिसाती رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** पाक से येह सुवाल किया कि मैं ख़्वाब में अबू सालेह़ मुअज़्ज़िन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को देखना चाहता हूं। (मेरी अ़र्ज़ क़बूल हुई और) मैं ने ख़्वाब में उन्हें अच्छी ह़ालत में देखा तो पूछा : ऐ अबू सालेह़ ! आप कैसे हैं ? फ़रमाया : ऐ अबुल ह़सन ! अगर सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी पर दुरूदे पाक की कसरत न की होती तो मैं हलाक (या'नी बरबाद) हो गया होता। (سعادت الدارین، ص136)

ज़ाते वाला पे बार बार दुरूद बार बार और बे शुमार दुरूद

बैठते उठते जागते सोते हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾10﴿ तक्लीफ़ की ह़ालत में दुरूद पढ़ना

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अह़मद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं "ह़म्माम" में गया तो गिर गया, दर्द की वज्ह से हाथ सूज गया, रात को इसी तक्लीफ़ में ही (दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते) सो गया, ख़्वाब में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने इल्तिजा करते हुए कहा : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! तो आप ने मुझ से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! (ह़ालते तक्लीफ़ में) तेरे दुरूद (पढ़ने) ने मुझे बेचैन कर दिया। जब सुब्ह़ हुई तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से दर्द और सूजन का नामो निशान तक न था। (القول البدیع، ص328 ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़्फ़िरत हो गई

ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा एक दीनी भाई था, उस के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उस ने कहा : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया। मैं ने पूछा : किस अ़मल के सबब ? कहने लगा : मैं ह़दीस शरीफ़ लिखता था, जब भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर आता तो मैं सवाब की निय्यत से "صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" लिखता, इसी अ़मल की बरकत से मेरी मग़्फ़िरत हो गई। (القول البدیع، ص463)

﴾12﴿ फ़िरिश्तों की इमामत

ह़ज़रते ह़फ़्स बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है कि ह़ज़रते अबू ज़ुरआ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा कि वोह आस्माने दुन्या में फ़िरिश्तों को नमाज़ पढ़ा रहे हैं, मैं ने कहा : आप ने येह मक़ाम कैसे पाया ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने अपने हाथ से एक लाख अह़ादीसे मुबारका लिखी हैं और मैं ने उन सब में "عَنِ النَّبِيِّ" के बा'द "صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" कहा है और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا या'नी जिस शख़्स ने मुझ पर एक बार दुरूद भेजा, **अल्लाह** पाक उस पर 10 रह़मतें भेजता है।

(تاریخ بغداد، 10/334، رقم:5469)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾13﴿ किताबों में दुरूदे पाक लिखने की बरकत

ह़ज़रते अबू सालेह़ अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ अस्सूफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मुह़द्दिस को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : **अल्लाह** पाक

ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा कि **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया। उन से पूछा गया : किस सबब से ? उन्हों ने कहा : अपनी किताबों में **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक लिखने के सबब। (تاریخ ابن عساکر، 54/113، رقم:6646)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾14﴿ दरिन्दे से नजात मिल गई

एक मरतबा ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन शाज़िली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه किसी जंगल में थे कि अचानक इन के सामने एक दरिन्दा आ गया, इन को अपनी जान की फ़िक्र पड़ गई तो इन्हों ने उस दरिन्दे से ख़ौफ़ज़दा हो कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुक़द्दसा पर दुरूद पढ़ना शुरूअ़ कर दिया इस ह़दीसे सह़ीह़ के पेशे नज़र कि "जो शख़्स हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक मरतबा दुरूद भेजता है, **अल्लाह** पाक उस पर दस दुरूद भेजता है।" और **अल्लाह** की त़रफ़ से दुरूद का मत़लब है (बन्दे पर उस की) रह़मत (का नुज़ूल) और जिस पर **अल्लाह** पाक रह़मत फ़रमाए तो वोह उसे काफ़ी है, पस उस दुरूद के सबब ह़ज़रते अबुल ह़सन अ़ली शाज़िली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने उस दरिन्दे से नजात ह़ासिल कर ली। (سعادۃ الدارین، ص152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾15﴿ कसरते दुरूद की बरकत से दीदारे मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه अपने भाई ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मुलाक़ात के लिये गए, वोह बहुत ख़ुश दिखाई दे रहे थे, (ख़ुशी की वज्ह पूछी गई तो) बताया कि मैं आज रात ख़्वाब में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे एक

डोल (या'नी बरतन) अ़ता फ़रमाया, जिस में पानी था, मैं ने पेट भर कर पिया, जिस की ठन्डक अभी तक महसूस कर रहा हूं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पूछा : आप को येह मक़ाम कैसे ह़ासिल हुवा ? फ़रमाया : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की वज्ह से। (سعادۃ الدارین، ص149)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾16﴿ बारगाहे रिसालत में दुरूद का सवाब नज़्र करने की बरकत

शैख़ अबुल मवाहिब मुह़म्मद शाज़िली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल हुवा तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "तुम (क़ियामत के दिन) एक लाख बन्दों की शफ़ाअ़त करोगे।" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस क़ाबिल कैसे हुवा ? तो इर्शाद फ़रमाया : "इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर उस का सवाब मुझे नज़्र कर देते हो।"

(الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 2/101، رقم:318)

नोट : सवाब नज़्र करने का त़रीक़ा येह है कि पढ़ते वक़्त सवाब नज़्र करने की दिल में निय्यत कर ले या पढ़ने से क़ब्ल या बा'द ज़बान से भी कह ले कि इस दुरूद शरीफ़ का सवाब जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़्र करता हूं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ 550 मुर्दों से अ़ज़ाबे क़ब्र दूर हो गया

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के पास एक

औ़रत ह़ाज़िर हुई और कहने लगी : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, मैं चाहती हूं कि उसे ख़्वाब में देख लूं, कोई ऐसी चीज़ बतलाइये जिस से मेरी मुराद पूरी हो जाए। आप ने उसे कुछ सिखाया, चुनान्चे उस औ़रत ने अपनी बेटी को ख़्वाब में देखा तो उस का ह़ाल येह था कि उस ने तारकोल (या'नी डामर) का लिबास पहन रखा था, उस की गरदन में लोहे का त़ौक़ था और पाउं में बेड़ियां थीं। औ़रत ने येह ख़्वाब ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को सुनाया, आप को इस से दुख हुवा। कुछ अ़र्से के बा'द (ख़्वाब में) ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस लड़की को जन्नत में देखा, उस के सर पर ताज था, वोह कहने लगी : ऐ ह़सन! आप मुझे पहचानते हैं, मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं जो आप के पास आई थी और मेरी तबाह ह़ालत आप को बतलाई थी। आप ने उस से पूछा : तेरी ह़ालत में येह इन्क़िलाब किस त़रह़ आया ? लड़की ने कहा : हमारे (क़ब्रिस्तान के) क़रीब से एक शख़्स का गुज़र हुवा और उस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा, (उस वक़्त) क़ब्रिस्तान के 550 अफ़राद अ़ज़ाब में थे, निदा (या'नी आवाज़) दी गई : इस शख़्स के दुरूद की बरकत से इन क़ब्र वालों से अ़ज़ाब को दूर कर दो !

इस वाक़िए़ के बारे में "मुकाशफ़तुल क़ुलूब" में है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक शख़्स के दुरूद भेजने की बरकत से इतने सारे लोग बख़्शे गए, तो वोह शख़्स जो पचास साल से हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज रहा हो, क्या वोह क़ियामत के दिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त को नहीं पा सकेगा ? (مکاشفۃ القلوب، ص24)

फ़ौत होने वाले के पास दुरूद पढ़ा जाता

ह़ज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में फ़ौत होने वाले के पास येह कहा जाता था : ऐ **अल्लाह** पाक ! फ़ुलां बिन फ़ुलां की मग़्फ़िरत फ़रमा, इस की क़ब्र ठन्डी और वसीअ़ कर देना, मौत के बा'द इसे चैन अ़त़ा फ़रमा, प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इसे क़ुर्ब नसीब कर, इसे दोस्त रख और इस की रूह़ को नेकों की अरवाह़ की त़रफ़ बुलन्द फ़रमा, हमें इस के साथ ऐसे घर (या'नी जन्नत) में जम्अ़ फ़रमा जिस में सिह़्ह़त बाक़ी रहे, दुख और थकावट दूर रहे । नीज़ उस शख़्स के पास मुसल्सल **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ा जाता यहां तक कि उस की रूह़ क़ब्ज़ हो जाती । (شرح الصدور، ص37)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दुरूद पढ़ने वाले की सांस की अहम्मिय्यत

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه का बयान है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स मुझ पर एक मरतबा दुरूद भेजता है तो **अल्लाह** पाक उस की सांस से एक सफ़ेद बादल पैदा करता है, फिर उस बादल को रह़मत के दरिया से फ़ाएदा ह़ासिल करने का हुक्म देता है, इस के बा'द उसे बरसने का हुक्म मिलता है, उस का जो क़त़रा ज़मीन पर पड़ता है उस से **अल्लाह** पाक सोना और जो क़त़रा पहाड़ों पर पड़ता है उस से चांदी पैदा करता है और जो क़त़रा किसी काफ़िर पर पड़ता है तो उसे ईमान की दौलत अ़त़ा होती है । (مکاشفۃ القلوب، ص47)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾18﴿ शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा पाने का ज़रीआ़

एक शख़्स ग़फ़्लत की वज्ह से हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ता था, एक रात उस ने ख़्वाब में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की मगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, उस आदमी ने अ़र्ज़ की, कि क्या आप मुझ से नाराज़ हैं ? प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : नहीं ! उस ने अ़र्ज़ की : फिर आप मेरी त़रफ़ क्यूं नहीं देख रहे ? हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें पहचानता नहीं हूं। उस ने अ़र्ज़ की : आप मुझे कैसे नहीं पहचानते ह़ालां कि मैं आप ही की उम्मत का एक शख़्स हूं और उ़लमा कहते हैं कि आप अपने उम्मतियों को इस से ज़ियादा पहचानते हैं जितना एक मां अपने बच्चों को पहचानती है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उ़लमा सच कहते हैं लेकिन तू ने दुरूद के ज़रीए़ मुझे अपनी याद नहीं दिलाई, मैं अपने उम्मतियों को अपने ऊपर दुरूद पढ़ने की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ पहचानता हूं (या'नी मेरा जो उम्मती मुझ पर जितना दुरूद भेजता है मैं उसे उतना पहचानता हूं), उस शख़्स के दिल में येह बात बैठ गई और जागने के बा'द उस ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रोज़ाना सो मरतबा दुरूद पढ़ता रहेगा और फिर वोह इस पर अ़मल भी करता रहा, कुछ अ़र्से के बा'द उस ने फिर ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार किया तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अब तुम्हें पहचानता हूं और (क़ियामत के दिन) तुम्हारी शफ़ाअ़त भी करूंगा।

(مکاشفۃ القلوب، ص30)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾19﴿ आग से छुटकारे की तह़रीर

ह़ज़रते ख़ल्लाद बिन कसीर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के नज़्अ़ के वक़्त एक काग़ज़ आप के सर के नीचे पाया गया जिस में लिखा था : येह ख़ल्लाद बिन कसीर के लिये आग से बराअत नामा (या'नी छुटकारे की तह़रीर) है, लोगों ने आप के घर वालों से आप के अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने बताया : वोह हर जुमुआ़ को हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर हज़ार मरतबा येह दुरूद : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ पढ़ा करते थे। (القول البدیع، ص382) बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़र्ज़ करते हैं :

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े महशर येह तेरी रिहाई की चिट्ठी मिली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 188)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अ़जीबुल ख़िल्क़त फ़िरिश्ता

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **अल्लाह** पाक ने एक फ़िरिश्ता पैदा किया जिस का एक पर मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में है, उस का सर अ़र्श के नीचे है और उस के दोनों पाउं सातवीं ज़मीन के नीचे हैं, मख़्लूक़ की ता'दाद के बराबर उस के पर हैं, मेरी उम्मत में से जब कोई मर्द या औ़रत मुझ पर दुरूद भेजता है तो **अल्लाह** पाक उस फ़िरिश्ते को हुक्म फ़रमाता है कि वोह अ़र्श के नीचे नूर के समुन्दर में ग़ोता लगाए तो वोह ग़ोता लगाता है, जब बाहर निकल कर वोह अपने परों को झाड़ता है तो उस के परों से क़त़रात टपक्ते हैं, **अल्लाह** पाक हर क़त़रे से एक फ़िरिश्ता पैदा करता है जो क़ियामत तक उस के लिये बख़्शिश की दुआ़ करता है। (مکاشفۃ القلوب، ص9)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾20﴿ बुरी शक्ल से नजात

कहते हैं कि एक आदमी ने जंगल में एक बुरी शक्ल को देख कर पूछा : तू कौन है ? उस ने जवाब दिया : मैं तेरा बुरा अ़मल हूं। उस आदमी ने पूछा : तुझ से नजात की भी कोई सूरत है ? उस ने जवाब दिया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ना। (مکاشفۃ القلوب، ص30)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मख़्लूक़ के सरदार पर दिनों के सरदार में दुरूद पढ़िये

अल्लाह पाक के महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : तुम्हारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ है, इसी दिन ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुए, इसी में उन की रूहे मुबारका क़ब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन बेहोशी त़ारी होगी, लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बा'द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ?" इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमाया है।"

(ابوداؤد، 1/391، حدیث:1047)

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ौज़े कौसर पर सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पहचानेंगे

मालिके जन्नत, साक़िये कौसर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़ली निशान है : "لَيُرِدَنَّ الْحَوْضَ عَلَيَّ اَقْوَامٌ مَّا اَعْرِفُهُمْ اِلَّا بِكَثْرَةِ الصَّلَاةِ عَلَيَّ या'नी ह़ौज़े

कौसर पर कुछ लोग मेरे पास आएंगे जिन्हें मैं कस्रते दुरूद के सबब पहचान लूंगा।" (القول البدیع، ص264)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

एक बुज़ुर्ग का मा'मूल

अबू अ़रूबा अल ह़र्रानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का मा'मूल था कि आप के सामने जब कोई अह़ादीस पढ़ता तो आप दुरूद पढ़े बिग़ैर न रहते और ख़ूब ज़ाहिर कर के पढ़ते और कहा करते कि ह़दीस शरीफ़ (सुनने) की एक बरकत येह है कि दुन्या में कसरत से दुरूद पढ़ने की सआ़दत मिलती है और आख़िरत में اِنْ شَآءَ اللّٰہ जन्नत की ने'मतें मिलेंगी। (سعادۃ الدارین، ص198)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾21﴿ औलाद के ह़ुसूल का बेहतरीन वज़ीफ़ा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपनी किताब **"सुरूरुल क़ुलूब बि ज़िक्रिल मह़बूब"** में लिखते हैं : शाह ग़रीबुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझ से दो सौदागर (या'नी Businessman) भाइयों ने बयान किया कि हमारे वालिद साह़िब के हां औलाद न होती थी, किसी फ़क़ीर साह़िब (या'नी **अल्लाह** वाले) से इल्तिजा की, उन्हों ने फ़रमाया : (एक) करोड़ बार दुरूद मुद्दते ग़ैर मुअ़य्यन (या'नी एक मुद्दत फ़िक्स नहीं, जितने वक़्त) में पढ़वाओ और पढ़ने वालों की कमाल ख़ातिर दारी (या'नी ख़ूब ख़िदमत) और दिलजूई करो। हमारे वालिद साह़िब ने ऐसा ही किया। **अल्लाह** पाक ने दुरूद की बरकत से (उन्हें) हम दोनों बेटे इ़नायत फ़रमाए।

(सुरूरुल क़ुलूब, स. 363)

मज़्कूरा विर्द के मुतअ़ल्लिक़ अहम मदनी फूल

यूं भी हो सकता है कि कुछ आ़शिक़ाने रसूल को जम्अ़ कर के दुरूद शरीफ़ पढ़वाएं और फिर उन की कमाल ख़ातिर दारी करें या'नी उन्हें अच्छे अच्छे खाने वग़ैरा खिलाएं और उन को तोह़फ़े दें। अलबत्ता येह बात याद रहे कि जिन से पढ़वाएं उन को बोलना नहीं है कि हम आप को इस के बदले में कुछ देंगे और उन के ज़ेह्न में भी येह न हो कि हमें इस दुरूद के पढ़ने के बदले में कुछ मिलेगा क्यूं कि तै़ हो जाने की सूरत में येह उन के पढ़ने की उजरत होगी और दुरूदे पाक के ख़त्म की उजरत जाइज़ नहीं है, यूं ही क़ुरआने करीम के ख़त्म की उजरत, मह़फ़िले ना'त की और इस त़रह़ जो दीगर इ़बादात होती हैं उन की उजरत जाइज़ नहीं। अलबत्ता चन्द मख़्सूस इ़बादात हैं जिन में उ़लमा ने इजाज़त दी है, लिहाज़ा अगर आप दुरूद शरीफ़ का येह ख़त्म किसी से करवाएं तो उन से कुछ भी तै़ न करें और न ही उन्हें कुछ देने का इज़्हार करें और न ही उन पढ़ने वालों के ज़ेह्न में हो कि हमें इस पढ़ने के बदले में कुछ मिलेगा। येह ख़ास एह़तियात ज़रूर ज़ेह्न में रखियेगा, اِنْ شَآءَاللہ फिर आप इस की बरकतें देखेंगे।

हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد ता 'वीज़े हर बला है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अहले सुन्नत की निशानी

शहज़ादए इमामे आ़ली मक़ाम, अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग, ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन ह़ुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم फ़रमाते हैं : عَلَامَۃُ اَھْلِ السُّنَّۃِ کَثْرَۃُ الصَّلَاۃِ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہ या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद पढ़ना अहले सुन्नत की निशानी है। (القول البدیع، ص131)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾22﴿ मेरे दुरूद मेरे गुनाहों से ज़ियादा हो गए

ह़ज़रते अबू ह़फ़्स रूमी अल काग़दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े सरदार थे, इन की वफ़ात के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَافَعَلَ اللهُ بِكَ؟" या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने जवाब दिया : **अल्लाह** पाक ने मुझ पर रह़्म फ़रमाया, मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी और मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमाया। पूछा गया : किस अ़मल के सबब ? जवाब दिया : जब बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर हुवा तो **अल्लाह** पाक ने फ़िरिश्तों को मेरे गुनाहों और मेरे पढ़े गए दुरूद का ह़िसाब लगाने का ह़ुक्म दिया, जब ह़िसाब लगाया गया तो मेरे दुरूद मेरे गुनाहों से ज़ियादा निकले, **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इस की क़द्रो मन्ज़िलत तुम्हारे लिये वाज़ेह़ हो गई है, लिहाज़ा इस से मज़ीद ह़िसाब मत लो ! और इसे मेरी जन्नत की त़रफ़ ले जाओ।

(القول البدیع، ص255)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा
700 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	1
﴾1﴿ क़र्ज़ा उतर गया	1
﴾2﴿ हर मुसीबत में काम आने वाला फ़िरिश्ता	9
क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते !	10
﴾3﴿ बीमारी से शिफ़ा मिल गई	11
﴾4﴿ राहे मदीना में फ़राइज़ के बा'द अफ़्ज़ल इबादत	12
﴾5﴿ सलाम भेजने वालों को जवाबे सलाम	13
﴾6﴿ बारगाहे रिसालत से सलाम	14
﴾7﴿ दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत का एक वाक़िआ़	16
﴾8﴿ आ़शिक़े दुरूद का मक़ाम	17
﴾9﴿ कसरत से दुरूद न पढ़ता तो हलाक हो जाता	18
﴾10﴿ तक्लीफ़ की ह़ालत में दुरूद पढ़ना	18
﴾11﴿ दुरूद शरीफ़ लिखने वाले की मग़्फ़िरत हो गई	19
﴾12﴿ फ़िरिश्तों की इमामत	19
﴾13﴿ किताबों में दुरूदे पाक लिखने की बरकत	19
﴾14﴿ दरिन्दे से नजात मिल गई	20
﴾15﴿ कस्रते दुरूद की बरकत से दीदारे मुस्त़फ़ा	20
﴾16﴿ बारगाहे रिसालत में दुरूद का सवाब नज़्र करने की बरकत	21
﴾17﴿ 550 मुर्दों से अ़ज़ाबे क़ब्र दूर हो गया	21
﴾18﴿ शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा पाने का ज़रीआ़	24
﴾19﴿ आग से छुटकारे की तह़रीर	25
﴾20﴿ बुरी शक्ल से नजात	26
ह़ौज़े कौसर पर सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पहचानेंगे	26
﴾21﴿ औलाद के हुसूल का बेहतरीन वज़ीफ़ा	27
﴾22﴿ मेरे दुरूद मेरे गुनाहों से ज़ियादा हो गए	29

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025